सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2024 का द्वितीय अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। यह अंक राजस्थान के कविशिरोमणि महाकवि माघ की जन्म जयन्ती विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है जिसमें महाकवि माघ के व्यक्तित्व और कृत्तित्व के विविध पक्षों पर शोधलेखों के माध्यम से प्रकाश डाला गया है। जो अध्येताओं के लिये निश्चित रूप से मार्गदर्शन करेगा। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित **'माघ का प्रकृति-चित्रण'** नामक शोधलेख में महाकवि माघ द्वारा रचित शिशुपालवध महाकाव्य में कवि के प्रकृति चित्रण को रेखांकित किया गया है। तत्पश्चात् डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा संकलित **'शिशुपालवध की हस्तलिखित टीकाएँ'** शोधलेख के माध्यम से पूर्व में क्षीरसागर जी द्वारा निबद्ध टीकाओं का आधार लेकर हस्तलिखित साहित्य में महाकवि माघ के सम्पूर्ण महाकाव्य के विश्लेषण का दिग्दर्शन कराया है। इसी क्रम में डॉ मनीषा शर्मा द्वारा संकलित '**महाकवि माघस्य वैदुष्यम्**' शोधलेख में महाकवि माघ के साहित्यिक वैदुष्य को प्रस्तुत किया गया है। तत्पश्चात् जयप्रकाश शर्मा द्वारा संकलित '**माघकवि माघ के विविध पक्ष**' शोध लेख में महाकवि माघ के व्यक्तित्व और कृत्तित्व के विविध पक्षों पर शोधलेखों के माध्यम से प्रकाश डाला गया है। तत्पश्चात् महामण्डलेश्वर ज्ञानेश्वरपुरी जी द्वारा लिखित **'भगवान् श्रीराम के दर्शनार्थ विविध साधन'** नामक शोधलेख में भगवान् राम के आराधना के सभी पक्षों तथा साधनों का उल्लेख किया है। अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा